British Prime Minister

Topic :- ब्रिटिश प्रधानमंत्री की नियुक्ति, शक्तियों तथा स्थिति का वर्णन करें।

अथवा

ब्रिटिश प्रधानमंत्री की शक्तियों, कार्यों और स्थिति का परीक्षण तथा मूल्यांकन कीजिए।

ब्रिटिश प्रधानमंत्री का पद ब्रिटिश शासन व्यवस्था में बड़े महत्व और शक्ति का पद माना जाता है। ब्रिटेन में संसदीय शासन प्रणाली को अपनाया गया है। वास्तविक कार्यपालिका मंत्री मंडल है, जिसका नेता प्रधानमंत्री होता है। जब तक उसे कॉमन सदन में बहुमत प्राप्त है तब तक वह अपने पद पर बना रहता है। प्रधानमंत्री मंत्री मंडल और संसद दोनों का नेता होता है।

ब्रिटिश प्रधान मंत्री की नियुक्ति :— ब्रिटिश प्रधानमंत्री की नियुक्ति ब्रिटेश सम्राट के द्वारा की जाती है, लेकिन सम्राट प्रधानमंत्री की नियुक्ति में स्वतंत्र नहीं होता है। उसे कॉमन सदन के बहुमत दल के नेता को प्रधानमंत्री नियुक्त करता है। प्रारम्भ में सम्राट दोनों सदनों में से किसी भी सदन के नेता को प्रधानमंत्री नियुक्त करता था, लेकिन बाद में यह प्रथा बन गई कि प्रधानमंत्री कॉमनसदन से होगा। इस स्थिति में जब कॉमन सदन में किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हो, वैसी स्थिति में सम्राट अपनी इच्छा से किसी ऐसे व्यक्ति को प्रधानमंत्री नियुक्त कर सकता है जो कॉमनसदन का विश्वास प्राप्त कर सके। दो दलीय प्रणाली होने के कारण ऐसी स्थिति पैदा नहीं ही होती है।

प्रधानमंत्री की शक्तियाँ व कार्य :— ब्रिटिश प्रधानमंत्री शक्तियों और कार्य निम्न प्रकार से हैं।

1. **मंत्रिमंडल का निर्माण करना :—** प्रधानमंत्री अपनी नियुक्ति के बाद अपने मंत्रिमंडल का गठन करता है। प्रधानमंत्री की सलाह से सम्राट मंत्रियों की नियुक्ति करता है। प्रधानमंत्री अपने दल के श्रेष्ठ और योग्य व्यक्तियों को मंत्रिमंडल में जगह देता है। मंत्रिमंडल की संख्या आदि का भी निर्णय लेता है। प्रधानमंत्री की इच्छा के विरुद्ध कोई भी व्यक्ति मंत्रिमंडल का सदस्य नहीं बन सकता है, वह संसद के दोनों सदनों से मंत्री बनाता है ताकि दोनों सदनों में सरकार का प्रतिनिधित्व बना रहे।

Scanned with CamScanner

2. मंत्रियों में विभागों का बटवारा करना :— मंत्रीमंडल के गठन के बाद मंत्रियों के बीच विभागों का बटवारा प्रधानमंत्री मंत्री की योग्यता और सुझाव को देखकर करता है। प्रधानमंत्री चाहे तो एक से अधिक विभाग अपने पास रख सकता है। कोई मंत्री विभाग के बटवारे में प्रधानमंत्री से हस्तक्षेप नहीं करता है।

3. मंत्रिमंडल की बैठकें बुलाना और उसकी अध्यक्षता करना :— प्रधानमंत्री समय-समय पर अपने मंत्रिमंडल की बैठकें बुलाता है। मंत्रिमंडल की बैठकों की अध्यक्षता प्रधानमंत्री करता है। मंत्रिमंडल के सभी फैसले प्रधानमंत्री की इच्छा से लिए जाते हैं।

4. मंत्रिमंडल का पुनर्गठन करना :— प्रधानमंत्री को कभी भी अपने मंत्रीमंडल में फेर बदल करने का अधिकार है। वह किसी भी मंत्री का स्तीफा मांग सकता है और नया मंत्री बना सकता है। वह मंत्रिमंडल की संरचना में भी परिवर्तन कर सकता है। प्रधानमंत्री को मंत्रियों के विभागों में भी परिवर्तन करने का भी अधिकार होता है।

5. मंत्रियों को हटाना :— वैसे तो मंत्रियों का पद से हटाने का अधिकार सम्राट का होता है, परन्तु सम्राट प्रधानमंत्री की सिफारिश पर ही किसी मंत्री को हटा सकता है। यदि कोई मंत्री प्रधानमंत्री के कहने पर भी यदि इस्तीफा नहीं देता है, तो प्रधानमंत्री सम्राट से उसे हटाने की अनुशंसा कर सकता है आमतौर पर प्रधानमंत्री के कहने मात्र से ही वह इस्तीफा दे देता है। प्रधानमंत्री मारग्रेट थैचर ने अपने मंत्रीमंडल के सात मंत्रियों का एकसाथ हटाया था। प्रधानमंत्री का स्वयं का इस्तीफा सम्पूर्ण मंत्रिमंडल का इस्तीफा या त्यागपत्र होता है।

6. समन्वय स्थापित करना :— प्रधानमंत्री का मुख्य कार्य सभी मंत्रालयों के बीच आपस में समन्वय स्थापित करना होता है। ताकि समय और धन का बचाव हो और प्रशासन एक इकाई के रूप में संगठित होकर कार्य कर सके। वह मंत्रालयों के बीच आपसी मतभेद को दूर कर सके, और समय-समय पर दिशा निर्देश भी देता रहे। प्रधान मंत्री विभागों का नियंत्रण और निरीक्षण भी समय-समय पर करता है।

7. राजा का मुख्य सलाहकार :— प्रधानमंत्री का मुख्य कार्य वह राजा का मुख्य सलाहकार भी होता है। राजा भी उससे महत्वपूर्ण मामलों में सलाह लेता है। चाहे लॉर्ड्स सदन में नियुक्ति की हो, या उच्चअधिकारियों की नियुक्ति या पदच्युति हो या कोई विदेशी

Scanned with CamScanner

मामले हो, राजा प्रधानमंत्री की सलाह अवश्य लेता है। और राजा के प्रधानमंत्री परामर्श के अनुसार ही कार्य करता है।

9. प्रशासन पर नियंत्रण :— प्रधानमंत्री मंत्रीमंडल का नेता होता है और नेता होने के कारण वह सम्पूर्ण देश पर अपना पूरा नियंत्रण रखता है। वह प्रशासन के किसी कार्य की जाँच करना उस पर नियंत्रण रखना तथा निर्देश देने का अधिकार रखता है। प्रधानमंत्री मंत्रिमंडल रूपी जहाज का कप्तान होता है, प्रशासन की सफलता का श्रेय उसे ही जाता है।

10. प्रधान मंत्री अपने राष्ट्र का नेता :— यदि कोई राष्ट्रीय आपदा आ जाए तो वह उसे निपटाने का हर सम्भव प्रयास करता है। सारा देश उसी की ओर देखता है। प्रथम विश्वयुद्ध के समय लायड जार्ज तथा दूसरे महायुद्ध के समय चर्चिल ने ऐसी भूमिका निभाकर अपने राष्ट्र की प्रशंसा अर्जित की। अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भी वह अपने राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है, वह वहा पर लिए गये निर्णयों को अपने देश में लागू करता है। विदेशमंत्री व कूटनीति में लगे हुए विशेषज्ञ उसी के परामर्श व आदेशानुसार कार्य करते है। प्रधानमंत्री अपने कुशल एवं सफल कार्यों से अपने देश का नाम ऊँचा करता है। चैम्बरलेन जैसे अकुशल प्रधानमंत्री ने दूसरे विश्वयुद्ध को आमंत्रित किया, उसके बाद चर्चिल जैसे कुशल प्रधानमंत्री ने देश को ऐसे गंम्भीर संकट से बचाया।

11. प्रधानमंत्री संसद का नेता :— प्रधानमंत्री संसद का भी नेता है। प्रधानमंत्री की सलाह पर सम्राट संसद का अधिवेशन बुलाता है। और उसी के सलाह अधिवेशनों की समाप्ति की घोषणा करता है। संसद मे सभी महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर प्रधानमंत्री देता है। प्रधानमंत्री ही संसद में सभी महत्वपूर्ण घोषणायें करता है। संसद की सभी कमेटियों में प्रधानमंत्री की इच्छा से सदस्य लिए जाते है।

12. प्रधान मंत्री पार्टी का नेता :— प्रधान मंत्री अपने पार्टी का नेता होता है। पार्टी का उसे पुरा समर्थन प्राप्त होता है। वह पार्टी की नीतियों को कार्य रूप देता है। चुनाव के समय उसी की इच्छा पार्टी के उम्मीदवारों का चयन किया जाता है। पार्टी की हार - जीत उसी के नेतृत्व पर निर्भर करता है। प्रधानमंत्री अपने पार्टी को मजबूत करने के लिए प्रयत्नशील रहता है। पार्टी उसी के मार्गदर्शन में कार्य करती है।

Scanned with CamScanner

ब्रिटिश प्रधानमंत्री की स्थिति :— ब्रिटिश प्रधानमंत्री की शक्तियों को देखकर हम उसकी स्थिति को समझ सकते हैं। ब्रिटिश शासन व्यवस्था में प्रधानमंत्री का पद बहुत ही शक्तिशाली माना जाता है उसके संबंध में कहा जाता है कि "कहीं भी कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिलेगा जिसके पास इतनी शक्तियाँ हों"। मंत्रिमंडल संबंधित उसकी शक्तियों को देखकर प्रधानमंत्री के बारे में कहा जाता है कि "वह कैबिनेट रूपी मेहराब की आधारशिला है।" यह कहावत बिल्कुल ठीक है, क्यों कि कैबिनेट रूपी महल उसी पर स्थिर होता है। उसका स्वयं का त्यागपत्र सम्पूर्ण मंत्रिमण्डल का त्यागपत्र माना जाता है। प्रधानमंत्री शासनरूपी जहाज का कप्तान भी कहा जाता है, क्यों कि सम्पूर्ण शासन उसकी देखरेख में चलता है। कई विद्वानों ने उसे "Steering Wheel of the Ship of the State" का दर्जा भी देते हैं। ब्रिटिश प्रधानमंत्री ब्रिटेन का एक बहुत शक्तिशाली राजनीतिक व्यक्ति है, परन्तु इसके बावजूद भी हम उसे तानाशाह नहीं कह सकते हैं।

ब्रिटेन में दो दलीय प्रणाली है, जिसमें एक दल शासन करता है, दूसरा दल विरोधी दल की भूमिका निभाता है। इंग्लैंड में विरोधी दल को मान्यता प्राप्त है, और वह वहाँ पर मजबूत है। विरोधी दल सरकारी दल पर अंकुश रखता है और उसकी गलतियों को पकड़ता है। जॉर्ज बर्नार्ड शॉ ने एक बार कहा था "ब्रिटिश प्रधानमंत्री अपनी पत्नी से अधिक अच्छी तरह विरोधी दल के नेता को जानता है"।

ब्रिटिश प्रधानमंत्री पर उसके पार्टी का नियंत्रण रहता है पार्टी उसे स्वेच्छाचारी नहीं बनने देगी। प्रधानमंत्री पर कॉमन सभा का कारगर नियंत्रण रहता है। यदि प्रधानमंत्री स्वेच्छाचारी बनने की चेष्टा करेगा तो कॉमन सभा उसे अविश्वास प्रस्ताव पास करके हटा देगी।

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि चाहे ब्रिटिश प्रधानमंत्री को कितनी ही अधिक शक्तियाँ प्राप्त क्यों न हों, वह तानाशाह नहीं बन सकता है। इस संबंध में 'फाइनर' ने प्रधानमंत्री की स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा है कि " वह सीजर नहीं है। वह देवता नहीं है जिसे चुनौती नहीं दी जा सके। उसके विचार ही आदेश नहीं हो सकते। वह सदा दया पर निर्भर करता है। उसकी अवधि उसके विचारों द्वारा की गयी लाभदायक सेवा-पर्यन्त है। किसी भी क्षण कोई विरोधी उसको अपदस्थ कर सकता है। 'Asquith' ने प्रधानमंत्री के संबंध में कहा है कि " The office of the Prime Minister is what its holder chooses to make it so"

Scanned with CamScanner